



यही सनातन सत्य है।



शरणानन्दजी के साहित्य (दर्शन) की विलक्षण व्यापकता

शरणानन्दजी का सार्वभौम सत्य

शरणानन्दजी की करण-निरपेक्ष वाणी मानव जीवन का चिरंतन सत्य है। मजहबी सीमाओं से अलग, मत-भेदों से अलग, वर्ग सम्प्रदाय इत्यादि की सीमाओं से मुक्त, वैचारिक रूढ़ियों से मुक्त शुद्ध सत्य ही मानव-जीवन के उद्धार के लिए, कल्याण के लिए, समाज के सामने आ जाए इसी उद्देश्य से महाराजजी ने इस विचार-प्रणाली का गठन किया। लिंग-भेद, वर्ग-भेद, मत-भेद, मजहब-भेद, सम्प्रदाय-भेद, ईश्वरवादी, अनीश्वरवादी, साकार उपासना, निराकार उपासना, इस प्रकार की जहाँ भी कोई बात होगी उसको स्वामीजी महाराज ने इस विचार-धारा में प्रवेश नहीं करने दिया।

उन्होंने एक ऐसी चीज मानव-समाज के सामने रखना पसंद किया कि जिसमें किसी प्रकार का भेद प्रवेश न कर सके। बात तो चिर पुरातन है लेकिन शैली अपूर्व है। विशेषता क्या है ? तो स्वामी जी महाराज ने यह चेष्टा की कि भाई किसी बाहरी मतभेद के आधार पर साधक-समाज में विभाजन न हो जाए। तो सारे भेदभावों के सब कारणों से अलग करके इसको बचा करके और एक ऐसा स्तर तैयार किया गया जहाँ सब भेदभाव छोड़कर व्यक्ति, व्यक्ति के नाते, मानव होने के नाते परस्पर बैठ करके विचार कर सके।

हिन्दू हिन्दू बना रहे, मुसलमान मुसलमान बना रहे, इसाई, इसाई बना रहे, कोई बात नहीं है, कोई फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन.... जो नहीं करना चाहिए वह किसी भी हालत में किसी भी कारण से, किसी भी भय से, किसी भी प्रलोभन से हम नहीं करेंगे। यही मानवता वाद है जो नहीं करना चाहिए सो नहीं करेंगे।

- देवकीजी (जीवन विवेचन भाग 7 क, प्रवचन 3)

“The one whose words are universally accepted and undeniable, that alone is the real Sanatan Truth.”

कुछ न चाहो, काम आ जाओ. * कोई और नहीं, कोई गैर नहीं.



यही सनातन सत्य है।



शरणानन्दजी के साहित्य (दर्शन) की विलक्षण व्यापकता

शरणानन्दजी का सार्वभौम सत्य

धर्म तो उसे कहते हैं, जो निषेधात्मक हो। जो विध्यात्मक प्रवृत्तियाँ हैं, वे मत, मजहब और सम्प्रदाय कहलाते हैं।.....जैसे, मैं किसीको हानि नहीं पहुँचाऊँगा -यह धर्म हो गया और किस-किस प्रकारसे दूसरोंको लाभ पहुँचाऊँगा - यह मजहब हो गया। जिसमें सब एकमत हों, वह 'धर्म' कहलाता है और जिसमें भेद हो, वह 'मजहब' कहलाता है। मजहब व्यक्तिगत सत्य होता है और धर्म सार्वभौम सत्य होता है। मानवमात्रका धर्म भिन्न नहीं हो सकता। मानवमात्रका धर्म एक ही है। सेवा - त्याग - प्रेम अर्थात् मानवता में ही पूर्णता निहित है।

- संतवाणी 8/110,111

ईश्वरवाद में मजहब-भेद हो ही नहीं सकता। ईश्वरवाद तो मानव-जीवन का एक ऐसा व्यापक सत्य है कि मन्दिर, मस्जिद और चर्च के भेद इसे विभाजित नहीं कर सकते। ईश्वरवादी होकर मजहबी संघर्ष करने वाला घोर अनीश्वरवादी है। कोई मंदिर में जाकर पूजा करेगा कि मस्जिद में जाकर नमाज पढ़ेगा कि चर्च में जाकर प्रार्थना करेगा—यह प्रश्न नहीं उठता। यदि कोई प्रभु को अपना मानकर उनके प्रति प्रेमभाव रखेगा और उन्हीं के नाते प्राणिमात्र के प्रति सद्भाव रखेगा तो उसे सब जगह परमात्मा मिलेगा।

- संतवाणी भाग 2/12

जबतक प्राणी अपनेको व्यक्तित्व, कुटुम्ब, वर्ग, जाति और देश की ममतामें आबद्ध रखता है, तबतक उसका जीवन विश्वके लिये उपयोगी सिद्ध नहीं होता।

- दर्शन और नीति 100

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी आदि सभी लाभ उठा सके इसलिए शरणानन्दजी की वाणी में एक-देशीय साधना की चर्चा कभी नहीं की जाती है। सर्वमान्य शुद्ध सत्य को देश, काल, मत, वर्ग आदि का भेद छु नहीं सकता है।

“The one whose words are universally accepted and undeniable, that alone is the real Sanatan Truth.”

कुछ न चाहो, काम आ जाओ. ❀ कोई और नहीं, कोई गैर नहीं.



यही सनातन सत्य है।



शरणानन्दजी के साहित्य (दर्शन) की विलक्षण व्यापकता

शरणानन्दजी का सार्वभौम सत्य

विश्वशान्ति कब होगी ? जब प्रत्येक भाई में, प्रत्येक बहन में यह चेतना आ जाय कि मैं मानव पहले हूँ, हिन्दू, ईसाई, मुसलमान, पारसी, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट और जाने क्या-क्या पीछे हूँ। शरीर विश्व की वस्तु है। हम जब विश्व की वस्तु को किसी काल्पनिक समाज, राष्ट्र, एवं सम्प्रदाय को दे देते हैं, तब विश्व में घोर अशान्ति उत्पन्न हो जाती है। - क्रान्तिकारी सन्तवाणी, प्रकरण-विश्वशान्ति

प्रत्येक मत तथा वाद साधन-दृष्टिसे आदरणीय तथा माननीय है; किन्तु उनकी ममता व्यक्तियोंको पागल बना देती है। औषधिका सेवन आरोग्यताके लिये अपेक्षित है, ममताके लिये नहीं। उसी प्रकार मत, सम्प्रदाय आदिकी अपेक्षा परिस्थितिके अनुरूप अपनेको सुन्दर बनानेमें है, परस्पर संघर्षके लिये नहीं।

- दर्शन और नीति 132

जीवनका जो सत्य होता है, वह किसी मजहबकी बात नहीं होती, किसी सम्प्रदायकी बात नहीं होती, वह सभीकी अपनी बात होती है। - संतवाणी 8/104

किसी भी संघ, संस्था, राष्ट्र, मजहब, इज्ममें यदि जीवन है तो मानवताका। मानवता-रहित संघ, संस्था आदि केवल संघर्षको ही जन्म देती हैं, जो विनाशका मूल है। - मानव-दर्शन 141

शरणानन्दजी की अहम्-शून्य वाणी में ज्ञान तथा प्रेम की अजस्र धारा सहज ही प्रवाहित होती रहती थी, जिसे सुनकर बड़े-बड़े शास्त्रज्ञ कहते थे और आज भी कह रहे हैं कि- वर्षों तक ग्रंथोंके अध्ययन से दर्शन के जो गूढ़ रहस्य समझ में नहीं आए थे, वे सब इन बे-पढ़े सन्तकी वाणीसे स्पष्ट हो गए।

- संतवाणी भाग 2 (परिचय)

“The one whose words are universally accepted and undeniable, that alone is the real Sanatan Truth.”

कुछ न चाहो, काम आ जाओ. * कोई और नहीं, कोई गैर नहीं.



यही सनातन सत्य है।



शरणानन्दजी के साहित्य (दर्शन) की विलक्षण व्यापकता

शरणानन्दजी का सार्वभौम सत्य

आज उपदेश गुरु की लेशमात्र भी आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि कोई ऐसा वीर पुरुष या वीर महिला हो, जो किसी उपदेश को स्वीकार कर सके। गुरु की सबसे बड़ी भक्ति यह है कि गुरु मिलना चाहे और शिष्य कहे कि जरूरत नहीं है ; क्योंकि जिसने गुरु की बात को अपनाया, उसमें गुरु का अवतरण हो जाता है। गुरु उसे नहीं कहते जो हर चीज सिखाता फिरे। गुरु एक ऐसे सत्य का बोध करा देता है जिसको अपनाने से सब कुछ आ जाता है अपने आप। कोई भी गुरु और ग्रन्थ हमें ऐसी बात बता ही नहीं सकते, जो कि हमारे विवेक में निहित नहीं है।

- क्रान्तिकारी संतवाणी, प्रकरण - गुरु

अगर परमात्माके माननेवालों को परमात्माकी याद नहीं आती, और करनी पड़ती है – यह कोई कम दुःखकी बात है ? यह कम आश्चर्यकी बात है ? अरे, मरे हुए बुजुर्गोंकी याद आती है आपको, गये हुए धनकी याद आती है आपको ! तो परमात्मा इतना घटिया हो गया कि उसकी याद आपको करनी पड़े ? याद नहीं आती है इसलिये कि आप उसे अपना नहीं मानते।

- संतवाणी 5

परमात्माको 'अभी' न मानना बड़ी भारी भूल होगी, 'अपना' न मानना उससे बड़ी भूल होगी, और 'अपनेमें' न मानना सबसे बड़ी भूल होगी।

- साधन त्रिवेणी 42

जिसने अपना निर्माण किया है, वह अपने ही में है और अपना है। इतना ही नहीं, निर्माताने अपनेमेंसे ही निर्माण किया है। उसे स्वीकार न कर दुःख-निवृत्तिमात्रसे सन्तुष्ट हो जाना अपनेको अनन्तरससे वंचित रखना है। अपनेमें सन्तुष्ट होना साधन है, साध्य नहीं।

- सफलताकी कुंजी 43

“The one whose words are universally accepted and undeniable, that alone is the real Sanatan Truth.”

कुछ न चाहो, काम आ जाओ. * कोई और नहीं, कोई गैर नहीं.